रंजीत कुमार



ड्रैगन ने हाथी को क्यों डसा

(भारत - चीन रिश्तों की कहानी)



अध्याय

प्रस्तावना – शशांक (भारत के पूर्व विदेश सचिव)	7
दो शब्द	10
नी, छी पाओ ल मा ?	13
हाथी और ड्रैगन - क्या साथ नृत्य कर सकते हैं	23
शतरंज बनाम वेईछी – भारत और चीन का रणनीतिक खेल	27
क्या चीनी सपना साकार होगा ?	32
चीन की सत्ता पर शी ने पकड़ मजबूत की	36
शी ने सुरक्षा कानून में संशोधन किया	42
सुन चू की समर नीति	49
शी के सत्ता सम्भालने के बाद पांच बार घुसपैठ	53
चीन की रणनीति – दो कदम आगे बढ़ो और एक कदम पीछे हटने की पेशकश करो	63
जब चीन के पांवों तले जमीन खिसकी	67
भारत ने तिब्बत कार्ड खेला	70
गलवान – आखेट युग की याद	73
गलवान से हटने की सहमति हो चुकी थी	79
शी के शासन काल में तनाव बढ़ने शुरु हुए	85
लद्दाख की बर्फीली चोटियों पर सेना	90
चीन की कथनी और करनी में फर्क	94
कोरोना के आरोपों से ध्यान हटाने के लिये चीन ने तनाव बढ़ाया ?	99
कोरोना को लेकर चीन पर निशाना साधा	103

ढांचागत निर्माण चीनी घुसपैठ के लिये बहाना	111
तिब्बत - दायीं हथेली और इसकी पांच उंगलियां	121
वास्तविक नियंत्रण रेखा कितनी लम्बी है	125
रक्षा व विदेश मंत्रियों के संवाद	129
तीन सेक्टरों में बंटी सीमा	134
अंग्रेजों ने अक्साई चिन पर अपना रुख क्यों बदला	143
चीन का वही पुराना राग – चओ अन लाए का 59 का प्रस्ताव मान लो	149
दौलतबेग ओल्दी खटक रहा है चीन को	153
कन्फ्यूसियस संस्थान बंद होने से चीन क्यों चिंतित	166
दुनिया का सबसे बड़ा महाजन	171
दुर्लभ खनिज- क्या चीन का विकल्प बन सकेगा भारत	176
चीन के खिलाफ लामबंद हो रही हैं बड़ी ताकतें	183
93 और 96 के दो अहम समझौते जिन्हें चीन ने तोड़ा	190
2013 का अतिक्रमण चीन ने क्यों वापस लिया	199
2005 का ऐतिहासिक समझौता	203
कैलाश क्यों कब्जा किया	210
पैंगोंग त्सो में सैनिकों की वापसी का समझौता	223
चीनी सैन्य घुसपैठ का खामियाजा आर्थिक रिश्तों को	231
मुम्बई पर साइबर हमला	238

चीनी सोच को समझाने वाली पुस्तक

न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व जगत में चीन रहस्यों के आवरण में ढंका एक प्राचीन मुल्क माना जाता रहा है। इसलिये चीन को समझने और चीन के प्रति अपना तटस्थ नजरिया बनाने के लिये जरूरी है कि प्राचीन चीन से लेकर आज के चीन की मानसिकता को हम समझें। भारत को लोग अंग्रेजी और अंग्रेजी सोच से चीन को समझते रहे हैं लेकिन चीन को समझने के लिये चीनी भाषा को ही माध्यम बनाया जा सकता है। चीन का पांच हजार साल का गौरवशाली इतिहास रहा है जिस पर चीन को गर्व है और जिसके आधार पर चीन दुनिया में अपने को श्रेष्ठतम समाज मानता है। भारत भले ही विश्व गुरु होने का दम्भ भरे और सपना देखे, चीन ने अपनी आर्थिक और सैनिक ताकत के बल पर दुनिया पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। आज का चीन इससे भी संतुष्ट नहीं है और ऐसा लगता है मानों आज के चीनी नेता शी चिन फिंग विश्व विजय अभियान पर निकले हैं और 2049 तक (नवचीन की स्थापना का सौंवा साल) दुनिया का सबसे ताकतवर और सबसे प्रभावशाली देश बनने का सपना देख रहे हैं।

ऐसे ही चीन के समक्ष आज भारत खड़ा है। लेकिन चीन की तरह भारत भी एक सभ्यतागत मुल्क रहा है इसलिये भारत विश्व गुरु बनने की चीनी महत्वाकांक्षा में आड़े आ रहा है। लेकिन कोई नहीं कहता कि भारत और चीन के बीच सभ्यताओं का टकराव है। भारत और चीन के बीच टकराव मुख्य तौर पर विश्व पर प्रभुत्व स्थापित करने की चीनी महत्वाकांक्षाओं की वजह से है जिसे समझाने का प्रयास आज के दौर के ताजा प्रकरण के संदर्भ में रंजीत कुमार ने प्रस्तुत पुस्तक में किया है।

भारत में चीन को पश्चिमी सोच और नजरिये से देखा जाता रहा है। वास्तव में हमारे अपने देश में ही हम अपने को पश्चिमी नजरिये से देखते रहे हैं। चीन के बारे में भारत में लोग बहुत कम जानते हैं जैसा कि इस पुस्तक में लिखा है, चीन में भारतीय फिल्में काफी लोकप्रिय हो चुकी हैं लेकिन भारत में ऐसा नहीं है। आधुनिक चीन के लोग फिल्मों के जरिये भी भारत को समझ रहे हैं लेकिन दोनों देशों में भाषा का भी काफी अंतर है जो भारत में

चीन को कम जानने की एक बड़ी वजह है। मैं समझता हूं कि भारत में चीन को समझने के लिये एक बड़ा खालीपन है जिसे इस पुस्तक ने भरने की कोशिश की है। पहली बार भारतीय दृष्टि से पाठकों को चीन को समझाने का प्रयास किया गया है। हमारी पृष्ठभूमि ऐसी रही है जिसमें हम सोचते हैं कि चीन कितना गैरपारदर्शी है। पुस्तक में सही लिखा है कि चीन की सोच उसके प्राचीन खेल वेईछी (शतरंज की तरह बोर्ड पर खेला जाने वाला खेल) से चलती रही है जब कि भारतीय लोग शतरंज के खेल के सिद्धांतों के अनुरुप सोचते रहे हैं।

चीन में भारत के प्रति सोच बौद्ध धर्म की वजह से प्रभावित हुई है तो 19वीं सदी के मध्य में चीन में जिस तरह अफीम युद्ध (अंग्रेजों और चीन के छिंग साम्राज्य के बीच चली लड़ाई) के दौरान भारतीयों का इस्तेमाल चीनियों को हांकने के लिये अंग्रेजों ने किया उससे भी भारत को लेकर चीनी सोच पर असर पड़ा है। चीन के शहरों में अंग्रेजों के लिये सुरक्षा ड्यूटी निभाने के लिये भेजे गए डंडे हांकते भारतीयों को देखकर भारत के प्रति चीनी लोगों में प्रतिकूल छवि बनी होगी। इन बातों पर चीन में फिल्में भी काफी बनी हैं जिससे चीन में आम लोगों में यह धारणा भी बनी है कि भारतीय लोग पश्चिमी समाज के हित प्रवर्त्तक रहे हैं।

निश्चय ही चीन में भारत को पश्चिमी स्वर्ग की तरह देखा जाता रहा है, खासकर उन लोगों में जो बौद्ध धर्म से प्रभावित हुए हैं, लेकिन चीन में यह भी धारणा बनी है कि भारत पश्चिमी देशों का हित पोषक रहा है जो आज के दौर में चीन के प्रतिद्वंद्वी देश रहे हैं। इसलिये हमें चीनी लोगों की सोच को समझने की भी जरुरत है। वास्तव में आज के दौर में चीन के लिये भारत मुख्य प्रतिद्वंद्वी नहीं है बल्कि अमेरिका से उसकी मुख्य होड़ है। निश्चय ही भारत साफ्टेवयर आदि तकनीकी क्षेत्र में चीन को प्रतिस्पर्द्धा दे रहा है लेकिन चीन के लिये अब यह कोई चिंता की बात नहीं रही। जहां तक भारत पाकिस्तान का सवाल है चीन भारत को पश्चिमी समर्थक मानता है लेकिन पाकिस्तान को इस रुप में देखता है कि पश्चिमी समर्थक होते हुए भी चीन के लिये उसने दरवाजे खोले। उसी तरह अमेरिका भी चीन को अपना मुख्य प्रतिद्वंद्वी मानता है, अमेरिका में जो भी प्रशासन हो चीन को इसी नजरिये से देखता है। भले ही अमेरिका चीन के बीच थोड़ा बहुत सहयोग चलता रहे लेकिन दोनों एक दूसरे को अपना प्रतिद्वंद्वी मानने लगे हैं और ऐसे में जब क्वाड (चार देशों अमेरिका, भारत, जापान और आस्ट्रेलिया का गुट) की

बात चलने लगी है और इसमें भारत अमेरिका का साझेदार है तो भारत के प्रति चीन की सोच बदलती है। इन विचारों की पुस्तक में सही व्याख्या की गई है। चीन को लेकर भारत और भारतीयों की सोच में यह बहुत बड़ी रिक्तता है। मेरे ख्याल से भारत के जो पाठक हैं उनके लिये समझना बहुत जरुरी है। इसलिये मैं सोचता हूं कि यदि इस पुस्तक का अन्य भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हो तो बहुत अच्छा रहेगा। आज के दौर में आम भारतीयों को चीन को अच्छी तरह से समझने की जरुरत है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से देखें तो एक तरफ बौद्ध धर्म है तो दूसरी ओर अफीम युद्ध भी है।जैसे जैसे चीन की पश्चिमी देशों से होड़ बढ़ रही है और भारत का पश्चिमी झुकाव बढ़ता जा रहा है उस माहौल में चीन यह देखता है कि भारत चीन के खिलाफ खड़ा हो चुका है।

चीन भारत को एक सभ्यतागत मुल्क मानता रहा है और भारत को भी चीन के बारे में यही मान कर चलना चाहिये। भारतीय सभ्यता के अंश तो चीन में समाहित हो गये लेकिन चीनी सभ्यता और सोच के बारे में भारतीय लोग नही जानते।

चीन देख रहा है कि कैसे उसे अमेरिका की बराबरी करनी है और इसलिये वह अब एक तरह से मुनरो डाक्ट्रीन को अपने स्तर पर लागू करता दिख रहा है। इसलिये वह अपने पड़ोसी देशों पर अपना प्रभाव बढ़ाने की रणनीति पर चल रहा है। 2049 तक चीन यह लक्ष्य हासिल करना चाहता है इसलिये वह मुनरो डाक्ट्रीन(1823 में अमेरिकी राष्ट्रपति जेम्स मुनरो द्वारा जारी अमेरिकी विदेश नीति) पर चलना चाह रहा है। इसी नजरिये से हमें चीन को समझने की जरुरत है। अस्सी के दशक के मध्य में साम्यवाद से पूंजीवाद की ओर कदम बढ़ाते चीन को नजदीक से देखने वाले रंजीत कुमार द्वारा चीन पर यह बहुत सामयिक पुस्तक लिखी गई है।

शशांक, (भारत के पूर्व विदेश सचिव)